

## पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

### रवींद्र केलेकर: जीवन परिचय

#### प्रस्तावना

रवींद्र केलेकर भारत के एक प्रसिद्ध लेखक, पत्रकार और गांधीवादी विचारक थे। उन्होंने कोंकणी और मराठी साहित्य को समृद्ध किया और गोवा मुक्ति आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। उनके लेखन में सामाजिक सरोकार, मानवीय मूल्य और राष्ट्रीय चेतना की झलक मिलती है। इस लेख में हम रवींद्र केलेकर के जीवन, साहित्यिक योगदान और समाज के प्रति उनके दृष्टिकोण को विस्तार से जानेंगे।

#### प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

रवींद्र राजाराम केलेकर का जन्म 7 मार्च 1925 को दक्षिण गोवा के कुनकोलिम गाँव में हुआ था। उनके पिता, डॉ. राजाराम केलेकर, एक प्रतिष्ठित चिकित्सक और विद्वान थे, जिन्होंने भगवद् गीता का पुर्तगाली में अनुवाद भी किया था।

केलेकर की प्रारंभिक शिक्षा पणजी के लिसेयुम हाई स्कूल में हुई। छात्र जीवन से ही वे गोवा मुक्ति आंदोलन से जुड़ गए और पुर्तगाली औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष में सक्रिय भूमिका निभाई। इस दौरान उनमें राष्ट्रवादी चेतना और सामाजिक सरोकार की भावना विकसित हुई, जिसने बाद में उनके साहित्यिक और सामाजिक कार्यों को गहराई से प्रभावित किया।

#### साहित्यिक योगदान

कोंकणी साहित्य भारत के पश्चिमी तटीय क्षेत्र में बोली जाने वाली कोंकणी भाषा में रचित साहित्य है। यह गोवा, कर्नाटक, महाराष्ट्र और केरल के कुछ हिस्सों में लोकप्रिय है। कोंकणी साहित्य की जड़ें धार्मिक ग्रंथों, लोककथाओं और मध्यकालीन कविताओं में हैं, लेकिन आधुनिक युग में यह एक सशक्त साहित्यिक आंदोलन के रूप में उभरा। इस साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी भाषिक विविधता और सांस्कृतिक गहराई है।

कोंकणी साहित्य को समृद्ध बनाने में कई लेखकों ने योगदान दिया है, जिनमें रवींद्र केलेकर का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। उनका लेखन सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना से परिपूर्ण है।

#### प्रमुख कृतियाँ--

##### 1. कोंकणी साहित्य:

##### 1. उजवाढाचे सूर — नवजागरण की पुकार:

‘उजवाढाचे सूर’ (प्रकाश की किरणें) रवींद्र केलेकर की एक प्रसिद्ध कोंकणी कृति है, जो सामाजिक और आत्मिक जागरूकता की भावना से ओतप्रोत है। इस पुस्तक में लेखक ने गोवा के आम जनमानस की सोच, संघर्ष और आशाओं को शब्दों में पिरोया है।

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

विशेषताएँ:

- गोवा की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को उजागर करती है।
- सामाजिक परिवर्तन और व्यक्ति की अंतरात्मा की पुकार को दर्शाती है।
- शैली सरल, भावनात्मक और प्रेरक है।

यह कृति कोंकणी नवजागरण साहित्य का प्रतिनिधि उदाहरण मानी जाती है।

2. समिध — आत्मदाह से आत्मविकास तक:

‘समिध’ का शाब्दिक अर्थ है — *यज्ञ में अर्पित की जाने वाली लकड़ी*, लेकिन इस पुस्तक में इसका अर्थ व्यापक आत्म-बलिदान और समाज के लिए योगदान से है। रवींद्र केलेकर ने इसमें उन विचारों और अनुभवों को साझा किया है जो उन्होंने अपने सामाजिक कार्यों और आंदोलनों के दौरान प्राप्त किए।

विशेषताएँ:

- गांधीवादी विचारधारा की झलक।
- कोंकणी भाषा और संस्कृति के लिए संघर्ष की अभिव्यक्ति।
- आत्मनिरीक्षण और सामाजिक दायित्व का समन्वय।

यह कृति पाठकों को न केवल प्रेरित करती है बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी की भावना भी उत्पन्न करती है।

3. सांगली — विचारों का संगठित प्रवाह:

‘सांगली’ रवींद्र केलेकर द्वारा लिखी गई एक और प्रभावशाली कोंकणी पुस्तक है, जिसमें विचारों का प्रवाह एक संगठित और प्रभावशाली शैली में होता है। इस कृति में समाज, राजनीति और भाषा के मुद्दों को विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है।

विशेषताएँ:

- वैचारिक गहराई और विवेचनात्मक दृष्टि।
- समकालीन मुद्दों की समीक्षा।
- लेखक के अनुभवों और मूल्यबोध की झलक।

‘सांगली’ को कोंकणी निबंध साहित्य का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है।

4. ओथांबे — आत्मीयता की अभिव्यक्ति:

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

‘ओथांबे’ (Othanbe) रवींद्र केलेकर की एक मार्मिक कृति है जिसमें व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक सच्चाइयों और मानवीय संवेदनाओं की सुंदर अभिव्यक्ति की गई है। यह पुस्तक पाठक को लेखक की भावनाओं के निकट लाती है और उसे सोचने पर विवश करती है।

विशेषताएँ:

- मानवीय संबंधों और सामाजिक बदलावों का चित्रण।
- भाषा में आत्मीयता और संवेदना।
- साहित्यिक अभिव्यक्ति में मौलिकता।

‘ओथांबे’ को पढ़ते हुए पाठक कोंकणी समाज की अंतर्भूत भावनाओं और संघर्षों को महसूस कर सकता है।

### 2. मराठी साहित्य--

रवींद्र केलेकर का नाम जब भी भारत के भाषाई, सामाजिक और साहित्यिक आंदोलनों की बात होती है, अत्यंत सम्मान से लिया जाता है। कोंकणी भाषा के एक सशक्त समर्थक होने के बावजूद उन्होंने मराठी भाषा में भी प्रभावशाली लेखन किया। उनकी मराठी कृतियाँ सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक विश्लेषण और वैचारिक स्पष्टता से परिपूर्ण हैं।

उनकी दो महत्वपूर्ण मराठी कृतियाँ हैं:

- कोंकणीचें राजकरण
- जापान जसा दिसला

इन दोनों पुस्तकों में भाषा, राजनीति, संस्कृति और जीवन-दर्शन का गहन अध्ययन मिलता है।

### 3. हिंदी साहित्य--

हिंदी साहित्य भारतीय भाषाओं का समृद्ध और विस्तृत संसार है, जिसमें विभिन्न राज्यों के लेखकों ने अपनी मातृभाषा से आगे बढ़कर हिंदी में साहित्यिक योगदान दिया है। ऐसे ही एक बहुभाषी, संवेदनशील और राष्ट्रवादी विचारक लेखक थे रवींद्र केलेकर।

हालाँकि उनकी मातृभाषा कोंकणी थी, लेकिन उन्होंने मराठी, हिंदी और गुजराती जैसी भाषाओं में भी साहित्य-सृजन किया। हिंदी में उनकी सबसे प्रमुख कृति है — “पतझर में टूटी पत्तियाँ”, जो विचार, अनुभव और सामाजिक संवेदनाओं का उत्कृष्ट उदाहरण मानी जाती है।

“पतझर में टूटी पत्तियाँ” — एक संवेदनशील आत्मकथात्मक दृष्टिकोण

## Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

पुस्तक का परिचय: “पतझर में टूटी पत्तियाँ” एक आत्ममंथन और जीवन के अनुभवों से भरी हुई कृति है। इसमें रवींद्र केलेकर ने जीवन की गहराइयों, सामाजिक संघर्षों, और गोवा मुक्ति आंदोलन से जुड़े अनुभवों को बड़ी संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है।

शीर्षक का प्रतीकात्मक अर्थ:

- पतझर जीवन के उस समय को दर्शाता है जब व्यक्ति गहराई से सोचता है।
- टूटी पत्तियाँ बीते अनुभवों, खोए हुए संबंधों और जीवन के उतार-चढ़ाव का प्रतीक हैं।

इस पुस्तक में लेखक ने स्मृति, अनुभूति और विचार को इस तरह पिरोया है कि पाठक खुद को हर पृष्ठ में खोज सकता है। इनके अलावा, उन्होंने काका कालेलकर की कई पुस्तकों का संपादन और अनुवाद भी किया।

## गांधीवादी विचारधारा और समाज सेवा

**रवींद्र केलेकर का दृष्टिकोण:** रवींद्र केलेकर न केवल एक सशक्त लेखक थे, बल्कि एक सक्रिय समाजसेवी और गांधीवादी विचारधारा के निष्ठावान अनुयायी भी थे। उन्होंने महात्मा गांधी के सिद्धांतों – सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, सादगी और नैतिकता – को अपने जीवन और लेखन में पूर्णतः आत्मसात किया।

## गांधीवादी मूल्यों से प्रेरित जीवन

1. सत्य और अहिंसा का पालन:

रवींद्र केलेकर का जीवन सत्य और अहिंसा पर आधारित था। उन्होंने जीवनभर सत्य के मार्ग पर चलने का प्रयास किया और सामाजिक संघर्षों में भी अहिंसक रास्ता अपनाया। उनका यह दृष्टिकोण न केवल व्यक्तिगत जीवन में बल्कि उनके लेखन और सामाजिक कार्यों में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

2. सादगी और आत्मनिर्भरता:

गांधीजी की तरह ही रवींद्र केलेकर ने सादगी को शक्ति माना। वे दिखावे से दूर रहते हुए, सादा जीवन और उच्च विचारों के पक्षधर थे। उन्होंने आत्मनिर्भरता और स्वदेशी उत्पादों के उपयोग को भी जीवन में स्थान दिया।

## गोवा मुक्ति आंदोलन में योगदान

1. राजनीतिक नहीं, नैतिक आंदोलन:

गोवा को पुर्तगाली शासन से मुक्त कराने के लिए चलाए गए आंदोलन में रवींद्र केलेकर की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। वे इसे केवल राजनीतिक संघर्ष नहीं, बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक आंदोलन मानते थे।

2. पत्रकारिता के माध्यम से जनजागरण:

उन्होंने पत्रकारिता और लेखन को हथियार बनाकर जनता में चेतना जगाई। उनके लेखों में गोवा की अस्मिता, पुर्तगाली शासन की नीतियों और जनता के अधिकारों पर गहरा विमर्श होता था।

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

समाज सेवा में सक्रिय भूमिका

1. ग्रामीण विकास और शिक्षा:

रवींद्र केलेकर का मानना था कि समाज की जड़ें गाँवों में हैं। उन्होंने ग्रामीण विकास, प्राथमिक शिक्षा और लोकसंस्कृति के संरक्षण पर जोर दिया। उनका साहित्य आम लोगों की भाषा और समस्याओं से जुड़ा रहा।

2. सामाजिक न्याय की स्थापना:

वे सामाजिक असमानता, जातिवाद और आर्थिक विषमता के खिलाफ आवाज उठाते थे। उनके लेखों में शोषित और वंचित वर्गों के प्रति संवेदना और उनके अधिकारों की माँग मुखर रूप से दिखाई देती है।

लेखन में गांधीवादी दर्शन की झलक

रवींद्र केलेकर के लेखन में गांधीजी के चिंतन की गूँज सुनाई देती है। उनकी कृतियों में न केवल विचारधारा, बल्कि व्यवहारिक सामाजिक सरोकार भी स्पष्ट दिखाई देते हैं। चाहे वह कोंकणी साहित्य हो या हिंदी की पुस्तक “पतझर में टूटी पत्तियाँ”, हर जगह गांधीवादी सोच का प्रभाव मौजूद है।

पुरस्कार और सम्मान

**रवींद्र केलेकर: साहित्यिक गौरव का प्रतीक:** रवींद्र केलेकर भारतीय साहित्य के उन चुनिंदा रचनाकारों में से एक हैं जिन्होंने न केवल कोंकणी भाषा को एक नई पहचान दी, बल्कि अपने विचारशील लेखन से समाज, संस्कृति और स्वतंत्रता आंदोलन को भी प्रभावित किया। उनके बहुमूल्य योगदान के लिए उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों और सम्मानों से नवाजा गया।

प्रमुख साहित्यिक सम्मान:

1. गोवा कला अकादमी साहित्य पुरस्कार:

रवींद्र केलेकर को गोवा कला अकादमी द्वारा उनके कोंकणी साहित्य में अमूल्य योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार ने उनके लेखन को एक सशक्त मंच दिया और उन्हें क्षेत्रीय भाषा के एक प्रमुख स्तंभ के रूप में स्थापित किया।

2. राज्य स्तरीय और राष्ट्रीय सम्मान:

केलेकर को समय-समय पर राज्य और केंद्र सरकारों द्वारा अनेक पुरस्कार प्रदान किए गए। उनके साहित्य में मौजूद गांधीवादी सोच, सामाजिक संवेदनशीलता और भाषाई प्रतिबद्धता ने उन्हें देशभर में विशेष स्थान दिलाया।

3. जैविक रचनात्मकता के लिए विशेष सम्मान:

उनकी रचनाओं में जो मानवीय गहराई और विचारों की स्वतंत्रता दिखाई देती है, उसके लिए उन्हें साहित्यिक सम्मेलनों और संस्थानों से विशेष आमंत्रण और सम्मान प्राप्त हुए।

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

निधन और विरासत

रवींद्र केलेकर: एक युग की समाप्ति, विचारों की अनंत यात्रा:

रवींद्र केलेकर, कोंकणी भाषा के सबसे प्रखर और प्रतिबद्ध साहित्यकारों में से एक थे। उनका जीवन साहित्य, समाज सेवा और भाषाई चेतना का प्रतीक रहा। 7 जनवरी 2010 को जब उनका निधन हुआ, तो यह केवल एक लेखक का अंत नहीं था, बल्कि कोंकणी भाषा और भारतीय साहित्य जगत के लिए एक गहरा शून्य था।

निधन: एक विचारशील युग का अंत:

गोवा के सांस्कृतिक और बौद्धिक जीवन में रवींद्र केलेकर की भूमिका मौलिक और दिशानिर्देशक रही है। उनका निधन न केवल कोंकणी साहित्य के लिए, बल्कि गांधीवादी विचारधारा और भारतीय भाषाओं के संरक्षण के लिए काम कर रहे आंदोलनकारियों के लिए भी एक अपूरणीय क्षति थी। उन्होंने अंतिम सांस तक समाज, भाषा और संस्कृति के लिए काम किया।

उनकी अमर विरासत

1. कोंकणी भाषा को दिलाया गौरव:

रवींद्र केलेकर ने कोंकणी को केवल मातृभाषा नहीं, बल्कि एक समृद्ध साहित्यिक परंपरा के रूप में प्रतिष्ठित किया। उन्होंने कोंकणी को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कराने की दिशा में सक्रिय भूमिका निभाई।

2. गांधीवादी सोच की पहचान बने:

उनकी लेखनी में सत्य, अहिंसा और सामाजिक न्याय की स्पष्ट झलक मिलती है। वे गांधीजी के मूल सिद्धांतों को लेखन और कर्म दोनों के स्तर पर आत्मसात करने वाले दुर्लभ साहित्यकार थे।

3. रचनात्मकता और संवेदना के पुरोधा:

*उजवाढाचे सूर, समिध, सांगली, पतझर में टूटी पत्तियाँ* जैसी कृतियाँ आज भी पाठकों के हृदय को स्पर्श करती हैं और समाज को सोचने के लिए प्रेरित करती हैं।

4. युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत:

उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि लेखन और सामाजिक कार्य मिलकर परिवर्तन ला सकते हैं। आज की युवा पीढ़ी उनके विचारों से सीख लेकर समाज के लिए कार्य कर रही है।

सांस्कृतिक उत्तराधिकार

रवींद्र केलेकर की विरासत केवल पुस्तकों में सीमित नहीं है। उनके विचार आज भी:

- शोध कार्यों में उद्धृत होते हैं,

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतञ्जर में टूटी पत्तियाँ)

- साहित्यिक सम्मेलनों में चर्चा का विषय होते हैं,
- और भाषाई अधिकारों के आंदोलनों में मार्गदर्शक सिद्धांत बन चुके हैं।

उनका योगदान यह बताता है कि एक लेखक, अगर संकल्पित हो, तो भाषा, समाज और राष्ट्र के भविष्य को आकार दे सकता है।

निष्कर्ष

रवींद्र केलेकर का निधन एक गंभीर सांस्कृतिक क्षति थी, लेकिन उनकी विरासत आज भी जीवंत है। उनकी रचनाएँ, विचार और संघर्ष हमें साहित्य और समाज सेवा की दिशा में प्रेरित करते हैं। वह आज भी भारतीय भाषाओं की गरिमा, गांधीवादी सोच और जनचेतना के प्रतीक के रूप में हमारे बीच जीवित हैं।

प्रश्न - अभ्यास:

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

1. प्रश्न 1. शुद्ध सोना और गिन्नी का सोना अलग क्यों होता है?

उत्तर 1: शुद्ध सोना पूरी तरह से शुद्ध होता है, इसमें कोई मिलावट नहीं होती। जबकि गिन्नी के सोने में कुछ मात्रा में ताँबा मिलाया जाता है, जिससे उसकी गुणवत्ता में अंतर आता है।

प्रश्न 2. प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट किसे कहते हैं?

उत्तर 2: वे लोग जो अपने आदर्शों को व्यावहारिक दृष्टिकोण से जोड़ते हैं, यानी आदर्शता और वास्तविकता का मेल करते हैं, उन्हें प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट कहा जाता है।

प्रश्न 3. पाठ के संदर्भ में शुद्ध आदर्श क्या है?

उत्तर 3: शुद्ध आदर्श वह है जब व्यक्ति अपने व्यवहार को पूरी तरह से आदर्श रूप में ढाल लेता है।

प्रश्न 4. लेखक ने जापानियों के दिमाग में 'स्पीड' का इंजन लगाने की बात क्यों कही है?

उत्तर 4: लेखक ने यह उदाहरण इसलिये दिया है क्योंकि जापानी लोग अत्यधिक तेजी से सोचते हैं और उनका दिमाग हर काम को शीघ्रता से करने के लिए हमेशा तत्पर रहता है।

प्रश्न 5. जापानी में चाय पीने की विधि को क्या कहते हैं?

उत्तर 5: जापान में चाय पीने की पारंपरिक विधि को 'चा-नो-यू' कहा जाता है।

प्रश्न 6. जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है, उस स्थान की क्या विशेषता है?

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतञ्जर में टूटी पत्तियाँ)

उत्तर 6: जापान में चाय पिलाने के स्थान की विशेषता यह है कि वहाँ दफ्ती की दीवारें और तातामी (चटाई) की जमीन होती है, जो उस स्थान को एक आकर्षक और शांत वातावरण प्रदान करती है।

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1. शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से और व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से क्यों की गई है?

उत्तर 1:

(i) आदर्शों की तुलना सोने से – आदर्शवादी व्यक्ति न केवल स्वयं ऊँचाई प्राप्त करते हैं, बल्कि दूसरों को भी उन्नति के मार्ग पर ले जाते हैं। समाज में जो शाश्वत मूल्य हैं, उनका निर्माण इन्हीं व्यक्तियों द्वारा किया गया है। इसलिए आदर्शों की तुलना शुद्ध सोने से की जाती है।

(ii) व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से – व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से इसलिए की गई है क्योंकि व्यवहारवादी लोग समाज में अक्सर नकारात्मक बदलाव लाते हैं और उसे गिराने का कार्य करते हैं।

प्रश्न 2. चाजीन ने कौन-सी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग से पूरी कीं?

उत्तर 2:

(i) चाजीन – जापान में, चाय परोसने वाले व्यक्ति को चाजीन कहा जाता है।

(ii) क्रियाएँ – चाजीन आगंतुक का सम्मानपूर्वक अभिवादन करता है, उसे कमर झुका कर प्रणाम करता है, और बैठने के लिए स्थान दिखाता है। वह अँगूठी को सुलगाता है, बर्तनों को तौलिए से साफ करता है, और इन सभी क्रियाओं को बड़े आदर और गरिमा के साथ करता है।

प्रश्न 3. 'टी-सेरेमनी' में कितने आदमियों को प्रवेश दिया जाता था और क्यों?

उत्तर 3:

(i) संख्या – जापान में टी-सेरेमनी में केवल तीन व्यक्तियों को प्रवेश दिया जाता है।

(ii) कारण – वहाँ सीमित स्थान होने के कारण अधिक व्यक्तियों का समावेश नहीं किया जा सकता है। इस आयोजन का उद्देश्य शांति की प्राप्ति है, जो अधिक व्यक्तियों के होने पर भंग हो सकती है।

प्रश्न 4. चाय पीने के बाद लेखक ने स्वयं में क्या परिवर्तन महसूस किया?

उत्तर 4:

(i) वर्तमान की पहचान – लेखक के अनुसार, हमें केवल वर्तमान क्षण में जीना चाहिए, क्योंकि वही सत्य है। चाय पीते समय, लेखक के मन से भूत और भविष्य की विचारधारा समाप्त हो गई और केवल वर्तमान का अनुभव हुआ, जो बहुत विस्तृत था।

(ii) असली जीना – चाय पीने के बाद, लेखक को यह अहसास हुआ कि असल जीवन जीने का क्या अर्थ है।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

प्रश्न 1. गांधीजी में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी; उदाहरण सहित इस बात की पुष्टि कीजिए।

उत्तर 1

(1) नेतृत्व क्षमता - लेखक के अनुसार, गांधी जी आदर्शों को व्यावहारिकता से कभी कम नहीं होने देते थे। वे व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर तक पहुंचाते थे, जिससे उनकी नेतृत्व क्षमता अद्भुत थी।

(2) उदाहरण - जब गांधी जी ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जनता से आह्वान किया, तो करोड़ों लोग उनके साथ चल पड़े। उदाहरण के तौर पर, असहयोग आंदोलन के समय, देश के बुद्धिजीवी अपनी रोजमर्रा की जिंदगी छोड़कर गांधी जी के साथ आंदोलन में शामिल हो गए।

प्रश्न 2. आपके विचार से कौन से ऐसे मूल्य हैं जो शाश्वत हैं? वर्तमान समय में इन मूल्यों की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 2

(1) शाश्वत मूल्य - जैसे शुद्ध सोना ताँबे के मिश्रण से आभूषण के रूप में बनता है, लेकिन उसकी वास्तविक मूल्यवत्ता सोने की ही रहती है, ठीक वैसे ही आदर्शों में व्यवहार का समावेश उन्हें और अधिक प्रभावशाली और अनुकरणीय बनाता है। ऐसे आदर्श ही शाश्वत होते हैं।

(2) प्रासंगिकता - आदर्शों को व्यवहार में समाहित करने से वे हमेशा प्रासंगिक रहते हैं और समय के साथ भी उनका महत्त्व कम नहीं होता। यही मूल्य आज भी समाज में प्रासंगिक हैं।

प्रश्न 3. अपने जीवन की किसी ऐसी घटना का उल्लेख कीजिए जब-

(1) शुद्ध आदर्श से आपको हानि-लाभ हुआ हो।

(2) शुद्ध आदर्श में व्यावहारिकता का पुट देने से लाभ हुआ हो।

उत्तर 3

(1) एक बार गुरुजी ने मुझे दुकान से सिगरेट लाने को कहा। मैंने उनके आदेश का पालन किया, लेकिन रास्ते में प्रिंसिपल ने मुझे देख लिया और मुझे दंडित किया। इस घटना से मुझे आदर्श के कारण हानि हुई, लेकिन साथ ही यह भी समझ में आया कि हमें कभी भी आदर्शों में पूरी तरह से लापरवाही नहीं करनी चाहिए।

(2) इस घटना से गुरुजी ने भी महसूस किया कि विद्यालय में छात्रों से कभी भी ऐसी वस्तुएं नहीं मंगवानी चाहिए और न ही ऐसी आदतें बढ़ानी चाहिए। उन्होंने सिगरेट से दूरी बनाई और विद्यालय में यह नियम लागू किया। इससे उन्हें लाभ हुआ।

प्रश्न 4. 'शुद्ध सोने में ताँबे की मिलावट या ताँबे में सोना', गांधीजी के आदर्श और व्यवहार के संदर्भ में यह बात किस तरह झलकती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 4

गांधी जी आदर्शों और व्यावहारिकता के बीच संतुलन बनाए रखते थे। वे आदर्शों को कभी भी व्यावहारिकता से कम नहीं होने देते थे, बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर तक लाकर उसे अधिक प्रभावशाली बनाते थे। वे

## Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतञ्जर में टूटी पत्तियाँ)

ताँबे में सोना मिलाकर उसे मूल्यवान बनाते थे, न कि सोने में ताँबे की मिलावट करते थे। इस प्रकार उनका आदर्श व्यवहार हमेशा प्रभावी और मूल्यवान बना रहता था।

प्रश्न 5. 'गिरगिट' कहानी में आपने समाज में व्याप्त अवसरानुसार अपने व्यवहार को पल-पल में बदल डालने की एक बानगी देखी। इस पाठ के अंश 'गिन्नी का सोना' के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए कि 'आदर्शवादिता' और 'व्यावहारिकता' इनमें से जीवन में किसका महत्व है?

उत्तर 5

जीवन में व्यावहारिकता का महत्व अधिक है। व्यवहारवादी लोग हमेशा जागरूक रहते हैं और परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेते हैं, जिससे वे अधिक सफल होते हैं। लेकिन यदि आदर्शों का पालन बिना व्यावहारिकता के किया जाए, तो यह समाज में भ्रम और असंतुलन पैदा कर सकता है। व्यावहारिकता समाज में सच्चे बदलाव और सफलता की ओर ले जाती है, जबकि आदर्शवादी लोग समाज में शाश्वत मूल्यों का निर्माण करते हैं।

प्रश्न 6. लेखक के मित्र ने मानसिक रोग के क्या-क्या कारण बताए? आप इन कारणों से कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर 6- (i) जीवन की तेज़ी – लेखक के मित्र के अनुसार, जापान में मानसिक रोग से पीड़ित लोगों की संख्या अस्सी प्रतिशत है। इसका मुख्य कारण वहाँ के जीवन की तेज़ी है। वहाँ लोग चलने की बजाय दौड़ते हैं और बात करने के बजाय जल्दी-जल्दी बोलते हैं। इस तेज़ जीवन शैली के कारण मानसिक दबाव बढ़ जाता है, जो मानसिक रोगों का कारण बनता है।

(ii) तनाव का बढ़ना – जापान में जब लोग अकेले रहते हैं, तो वे खुद से लगातार बात करते रहते हैं। वे एक महीने का काम एक दिन में निपटाने की कोशिश करते हैं, जिससे मानसिक दबाव और तनाव बढ़ता है। दिमाग की गति बढ़ाने पर तनाव बढ़ना स्वाभाविक है। यह कारण भी पूरी तरह सही है।

इन कारणों से मैं सहमत हूँ, क्योंकि वर्तमान समय में बढ़ती प्रतिस्पर्धा और तेज़ी से बदलती जीवनशैली मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।

प्रश्न 7. लेखक के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 7:

(1) भूत और भविष्य का अस्तित्व नहीं है: लेखक का मानना है कि हम अक्सर या तो अतीत में जीते हैं या भविष्य के बारे में सोचते रहते हैं, लेकिन असल में ये दोनों काल वास्तविक नहीं हैं। अतीत अब समाप्त हो चुका है और भविष्य अभी आया नहीं है, इसलिए इन दोनों के लिए चिंता करना या प्रयास करना व्यर्थ है।

(2) वर्तमान ही सत्य है: लेखक के अनुसार, वर्तमान समय ही हमारे सामने एकमात्र वास्तविकता है। हमें जो कुछ भी हो रहा है, वह सीधे तौर पर हमारे सामने है और हम उसे महसूस कर रहे हैं। वर्तमान क्षण का ही हम अनुभव कर सकते हैं, इसलिए हमें वर्तमान में ही जीना चाहिए।

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

1. समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है।

उत्तर 1: आशय- लेखक का कहना है कि समाज में यदि कुछ शाश्वत मूल्य हैं जैसे सत्य, ईमानदारी, निष्ठा, समानता, और भाईचारे, तो वे हमें आदर्शवादी व्यक्तियों से प्राप्त होते हैं। समाज इन आदर्शों पर आधारित है और यदि हम केवल व्यावहारिकता को प्राथमिकता दें, तो समाज का पतन हो सकता है।

2. जब व्यावहारिकता का बखान होने लगता है तब 'प्रेक्टिकल आइडियालिस्ट' के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं और उनकी व्यावहारिक सूझ-बूझ ही आगे आने लगती है।

उत्तर 2: आशय- लेखक का विचार है कि जब व्यावहारिकता को अधिक महत्व दिया जाता है, तब आदर्श धीरे-धीरे जीवन से बाहर होते जाते हैं। इसका मतलब यह है कि जब आदर्शों को नकारा जाता है, तब समाज में मूल्यहीन व्यवहार फैलने लगते हैं।

3. हमारे जीवन की रफ्तार बढ़ गई है। यहाँ कोई चलता नहीं बल्कि दौड़ता है। कोई बोलता नहीं, बकता है। हम जब अकेले पड़ते हैं तब अपने आपसे लगातार बड़बड़ाते रहते हैं।

उत्तर 3: आशय- लेखक ने जापान में बढ़ते मानसिक तनाव का कारण जीवन की बढ़ती गति को बताया। वहाँ लोग दौड़ते हैं, चलते नहीं, और बकबक करते रहते हैं। अकेलेपन में, वे अपने आप से बातें करते रहते हैं, क्योंकि उनके मन में अशांति और तनाव होता है, जो मानसिक रोग का संकेत है।

4. सभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण ढंग से कीं कि उसकी हर भंगिमा से लगता था मानो जयजयवंती के सुर गूँज रहे हों।

उत्तर 4: आशय- लेखक ने चाय परोसने वाले व्यक्ति की सेवा और व्यवहार को याद किया। उसकी सभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण और मधुर थीं कि हर हरकत में आनंद की अनुभूति हो रही थी, जैसे कि हर भंगिमा में विजय के स्वर गूँज रहे हों।

### भाषा अध्ययन

1. नीचे दिए गए शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए- व्यावहारिकता, आदर्श, सूझबूझ, विलक्षण, शाश्वत ।

उत्तर 1:

1. व्यावहारिकता - बड़े लोगों की व्यावहारिकता हमेशा हमारी मदद करती है।
2. आदर्श - केवल आदर्शों का पालन करने से सफलता नहीं मिलती, उसे व्यवहार में उतारना जरूरी है।
3. सूझबूझ - किसी भी कार्य को करते समय सूझबूझ और समझदारी से काम लेना चाहिए।
4. विलक्षण - उस बच्चे में कुछ विशेष और विलक्षण गुण हैं जो दूसरों से अलग हैं।
5. शाश्वत - यह प्रकृति का शाश्वत नियम है कि हर शुरुआत का एक अंत होता है।

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतञ्जर में टूटी पत्तियाँ)

2. 'लाभ-हानि' का विग्रह इस प्रकार होगा- लाभ और हानि । यहाँ द्वंद्व समास है जिसमें दोनों पद प्रधान होते हैं। दोनों पदों के बीच योजक शब्द का लोप करने के लिए योजक चिह्न लगाया जाता है। नीचे दिए गए द्वंद्व समास का विग्रह कीजिए -

(क) माता-पिता =

(ख) पाप-पुण्य =

(ग) सुख-दुख =

(घ) रात-दिन =

(ङ) अन्न-जल =

(च) घर-बाहर =

(छ) देश-विदेश =

उत्तर 2: यहां पर दिए गए द्वंद्व समास का विग्रह (विभाजन) इस प्रकार होगा:

(क) माता-पिता = माता और पिता

(ख) पाप-पुण्य = पाप और पुण्य

(ग) सुख-दुख = सुख और दुख

(घ) रात-दिन = रात और दिन

(ङ) अन्न-जल = अन्न और जल

(च) घर-बाहर = घर और बाहर

(छ) देश-विदेश = देश और विदेश

यह सभी द्वंद्व समास हैं, जिसमें दोनों पद प्रधान होते हैं और योजक "और" का उपयोग किया जाता है।

3. नीचे दिए गए विशेषण शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए-

(क) सफल =

(ख) विलक्षण =

(ग) व्यावहारिक =

(घ) सजग =

(ङ) आदर्शवादी =

(च) शुद्ध =

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतञ्जर में टूटी पत्तियाँ)

उत्तर 3: नीचे दिए गए विशेषण शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ इस प्रकार बन सकती हैं:

- (क) सफल = सफलता
- (ख) विलक्षण = विलक्षणता
- (ग) व्यावहारिक = व्यावहारिकता
- (घ) सजग = सजगता
- (ङ) आदर्शवादी = आदर्शवाद
- (च) शुद्ध = शुद्धता

इन सभी विशेषणों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाते समय "ता" या "वाद" प्रत्यय का प्रयोग किया गया है।

4. नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित अंश पर ध्यान दीजिए और शब्द के अर्थ को समझिए -

- (क) शुद्ध सोना अलग है।
- (ख) बहुत रात हो गई अब हमें सोना चाहिए।

ऊपर दिए गए वाक्यों में 'सोना' का क्या अर्थ है? पहले वाक्य में 'सोना' का अर्थ है धातु 'स्वर्ण'। दूसरे वाक्य में 'सोना' का अर्थ है 'सोना' नामक क्रिया। अलग-अलग संदर्भों में ये शब्द अलग अर्थ देते हैं अथवा एक शब्द के कई अर्थ होते हैं। ऐसे शब्द अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं। नीचे दिए गए शब्दों के भिन्न-भिन्न अर्थ स्पष्ट करने के लिए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

उत्तर, कर, अंक, नग

उत्तर 4:

1. उत्तर:

- पहला अर्थ (उत्तर देना):  
"उसने मेरे सवाल का तुरंत उत्तर दिया।"  
(यहाँ 'उत्तर' का अर्थ है 'जवाब देना'।)
- दूसरा अर्थ (दिशा):  
"उत्तर दिशा में सूरज उगता है।"  
(यहाँ 'उत्तर' का अर्थ है 'दिशा'।)

2. कर:

- पहला अर्थ (करना):  
"वह रोज सुबह योग करता है।"  
(यहाँ 'कर' का अर्थ है 'किया गया कार्य' या 'क्रिया'।)

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

- दूसरा अर्थ (राजस्व, टैक्स):  
"सरकार ने आयकर में वृद्धि की है।"  
(यहाँ 'कर' का अर्थ है 'कर' या 'टैक्स'।)

3. अंक:

- पहला अर्थ (संख्या, अंक):  
"उसने गणित परीक्षा में 100 अंक प्राप्त किए।"  
(यहाँ 'अंक' का अर्थ है 'संख्या' या 'गणना'।)
- दूसरा अर्थ (चिह्न, चिन्ह):  
"उसके नाम के पास एक विशेष अंक है, जो उसे पहचानता है।"  
(यहाँ 'अंक' का अर्थ है 'चिह्न' या 'सांकेतिक चिन्ह'।)

4. नग:

- पहला अर्थ (नग्न, बिना कपड़ों के):  
"उसने नग्न अवस्था में नदी में कूदने का निर्णय लिया।"  
(यहाँ 'नग' का अर्थ है 'नग्न' या 'बिना वस्त्र के'।)
- दूसरा अर्थ (संपत्ति, धन):  
"व्यापारी ने नगद भुगतान किया।"  
(यहाँ 'नग' का अर्थ है 'नकद' या 'धन'।)

इन उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि शब्दों का अर्थ उनके संदर्भ के आधार पर बदलता है और ऐसे शब्दों को अनेकार्थी शब्द कहा जाता है।

5. नीचे दिए गए वाक्यों को संयुक्त वाक्य में बदलकर लिखिए-

(क) 1. अँगीठी सुलगायी।

2. उस पर चायदानी रखी।

(ख) 1. चाय तैयार हुई।

2. उसने वह प्यालों में भरी।

(ग) 1. बगल के कमरे से जाकर कुछ बरतन ले आया।

2. तौलिये से बरतन साफ़ किए।

उत्तर 5- संयुक्त वाक्य में बदलना -

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

(क): संयुक्त वाक्य: अँगीठी सुलगायी और उस पर चायदानी रखी।

(यहाँ पर दोनों वाक्यों को "और" योजक से जोड़ा गया है।)

(ख): संयुक्त वाक्य: चाय तैयार हुई और उसने वह प्यालों में भरी।

(यहाँ पर दोनों वाक्यों को "और" योजक से जोड़ा गया है।)

(ग): संयुक्त वाक्य: वह बगल के कमरे से जाकर कुछ बरतन ले आया और तौलिये से बरतन साफ़ किए।

(यहाँ पर दोनों वाक्यों को "और" योजक से जोड़ा गया है।)

इन संयुक्त वाक्यों में दोनों क्रियाओं को जोड़ने के लिए "और" योजक का उपयोग किया गया है।

6. नीचे दिए गए वाक्यों से मिश्र वाक्य बनाइए-

(क) 1. चाय पीने की यह एक विधि है।

2. जापानी में उसे चा-नो-यू कहते हैं।

(ख) 1. बाहर बेढब-सा एक मिट्टी का बरतन था।

2. उसमें पानी भरा हुआ था।

(ग) 1. चाय तैयार हुई।

2. उसने वह प्यालों में भरी।

3. फिर वे प्याले हमारे सामने रख दिए।

उत्तर 6- यहाँ पर दिए गए वाक्यों से मिश्र वाक्य बनाए गए हैं:

वाक्य: चाय पीने की यह एक विधि है, जिसे जापानी में चा-नो-यू कहते हैं।

(यहाँ पर दो स्वतंत्र वाक्यों को जोड़कर एक मिश्र वाक्य बनाया गया है।)

(ख) वाक्य: बाहर बेढब-सा एक मिट्टी का बरतन था, जिसमें पानी भरा हुआ था।

(यहाँ पर दोनों वाक्यों को एक दूसरे से जोड़ा गया है।)

(ग) वाक्य: चाय तैयार हुई, और उसने वह प्यालों में भरी, फिर वे प्याले हमारे सामने रख दिए।

(यहाँ पर तीन वाक्यों को जोड़कर एक मिश्र वाक्य बनाया गया है।)

### योग्यता विस्तार

1. गांधीजी के आदर्शों पर आधारित पुस्तकें पढ़िए; जैसे - महात्मा गांधी द्वारा रचित 'सत्य के प्रयोग' और गिरिराज किशोर द्वारा रचित उपन्यास 'गिरिमिटिया'।

## Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतञ्जर में टूटी पत्तियाँ)

उत्तर 1- गांधीजी के आदर्शों पर आधारित कई महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं, जो उनके जीवन और विचारों को समझने में मदद करती हैं। यहाँ कुछ प्रमुख पुस्तकें हैं:

1. "सत्य के प्रयोग" (By Mahatma Gandhi): यह पुस्तक महात्मा गांधी द्वारा रचित है और उनकी आत्मकथा का एक महत्वपूर्ण भाग है। इसमें उन्होंने सत्य, अहिंसा और उनके जीवन के आदर्शों के बारे में विस्तार से लिखा है। गांधीजी ने इस पुस्तक में अपने अनुभवों और संघर्षों को साझा किया, जिसमें उन्होंने सत्य की खोज और जीवन में उसकी महत्ता पर विशेष ध्यान दिया। यह पुस्तक उनके जीवन के सिद्धांतों और नैतिक मूल्यों को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

2. "गिरमिटिया" (By Giriraj Kishore): "गिरमिटिया" एक उपन्यास है, जो गिरिराज किशोर द्वारा रचित है। यह उपन्यास गांधीजी के आदर्शों और उनके प्रभाव को समाज के विभिन्न हिस्सों में फैलाने की कहानी है। इसमें बर्मा (म्यांमार) के गिरमिटिया मजदूरों की कहानी के माध्यम से गांधीजी के विचारों का प्रसार और उनके संघर्षों को दर्शाया गया है। यह पुस्तक गांधीजी के अहिंसा, समाज सुधार और स्वतंत्रता संग्राम के दृष्टिकोण से प्रेरित है।

इन पुस्तकों को पढ़ने से न केवल गांधीजी के विचारों को समझने में मदद मिलती है, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम और समाज सुधार के उनके योगदान को भी बेहतर तरीके से जाना जा सकता है।

## 2. पाठ में वर्णित 'टी-सेरेमनी' का शब्द चित्र प्रस्तुत कीजिए ।

उत्तर 2: 'टी-सेरेमनी' का शब्द चित्र:

पाठ में वर्णित 'टी-सेरेमनी' एक बहुत ही विशिष्ट और परिष्कृत चाय पीने की विधि को दर्शाती है, जिसे जापान में 'चा-नो-यू' कहा जाता है। यह एक धार्मिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया है, जो चाय के आदान-प्रदान से कहीं अधिक है। इसमें शांति, सौम्यता, और ध्यान की भावना होती है। इस दौरान चाय तैयार करने और उसे परोसने का तरीका अत्यधिक सटीक और समर्पित होता है।

'टी-सेरेमनी' के दौरान कमरे की हल्की रोशनी, शांतिपूर्ण वातावरण और ध्यान केंद्रित करने की स्थिति होती है। एक व्यक्ति चाय बनाने के लिए चाय के विशेष पात्रों का उपयोग करता है। चाय की पत्तियों को अच्छे से माप कर और पानी को सही तापमान पर लाकर तैयार किया जाता है। चाय के तैयार होते ही, उसे बड़े आदर से मेहमानों को परोसा जाता है। हर कदम में संयम, शांति और विनम्रता की भावना झलकती है। चाय पीने के इस विधि में न केवल स्वाद, बल्कि मानसिक शांति और संतुलन भी महत्वपूर्ण होता है।

इस 'टी-सेरेमनी' का उद्देश्य न केवल चाय पीने का आनंद लेना होता है, बल्कि यह मानसिक शांति, आंतरिक संतुलन, और सौहार्दपूर्ण संबंधों का प्रतीक भी है।

## परियोजना कार्य

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

1. भारत के नक्शे पर वे स्थान अंकित कीजिए जहाँ चाय की पैदावार होती है। इन स्थानों से संबंधित भौगोलिक स्थितियाँ क्या हैं और अलग-अलग जगह की चाय की क्या विशेषताएँ हैं, इनका पता लगाइए और परियोजना पुस्तिका में लगाइए।

उत्तर 1: छात्र स्वयं करें।

भारत में चाय की प्रमुख पैदावार वाले क्षेत्रों को निम्नलिखित स्थानों के रूप में विभाजित किया जा सकता है:

1. आसाम:

- भौगोलिक स्थिति: आसाम भारत के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित है। यह ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे बसा हुआ है और समुद्र तल से 50 मीटर से 1000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यहाँ का जलवायु उष्णकटिबंधीय और वर्षा प्रधान है।
- चाय की विशेषताएँ: आसाम की चाय काली चाय के लिए प्रसिद्ध है। यह चाय स्वाद में मजबूत, तीव्र और मलीन होती है। आसाम की चाय का उत्पादन मुख्य रूप से असम घाटी में होता है।

2. दार्जिलिंग:

- भौगोलिक स्थिति: दार्जिलिंग पश्चिम बंगाल राज्य में स्थित है और यह हिमालय पर्वतमाला में समुद्र तल से 1200 मीटर से 2000 मीटर की ऊंचाई पर बसा हुआ है। यहाँ की जलवायु ठंडी और शीतल होती है।
- चाय की विशेषताएँ: दार्जिलिंग की चाय को "चाय की शैम्पेन" के रूप में जाना जाता है। यह चाय हल्की, सुगंधित, और फ्लोरल (फूलों जैसी) होती है। यह कच्ची चाय के उच्च गुणवत्ता के कारण विशिष्ट होती है।

3. निलगिरी:

- भौगोलिक स्थिति: निलगिरी पहाड़ों में तमिलनाडु और केरल के कुछ हिस्सों में स्थित है। यह समुद्र तल से 1000 मीटर से 2000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यहाँ का जलवायु उष्णकटिबंधीय है।
- चाय की विशेषताएँ: निलगिरी की चाय का स्वाद हल्का, मीठा और सुगंधित होता है। यह चाय काली और हरी दोनों प्रकार की होती है, जो ऊंची पहाड़ियों में उगाई जाती है।

4. कर्नाटका:

- भौगोलिक स्थिति: कर्नाटका के पश्चिमी घाटों में चाय की पैदावार होती है। यह राज्य समुद्र तल से 600 मीटर से 1000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है।
- चाय की विशेषताएँ: कर्नाटका की चाय निलगिरी की तरह हल्की और सुगंधित होती है। कर्नाटका का मौसम चाय की खेती के लिए उपयुक्त है, और यहाँ की चाय में हल्के और मध्यम स्वाद की विशेषता होती है।

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

5. हिमाचल प्रदेश:

- भौगोलिक स्थिति: हिमाचल प्रदेश की चाय की खेती शिमला, कुल्लू और कांगड़ा में की जाती है। यह क्षेत्र समुद्र तल से 1000 मीटर से 1800 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है।
- चाय की विशेषताएँ: हिमाचल प्रदेश की चाय में हल्का और प्राकृतिक स्वाद होता है। यह चाय कुछ हद तक दार्जिलिंग जैसी होती है, लेकिन इसमें कम तीव्रता होती है।

6. मेघालय:

- भौगोलिक स्थिति: मेघालय का चाय उत्पादन क्षेत्र मुख्य रूप से पूर्वी गारो, खासी और जयंतिया पहाड़ों में स्थित है। यह क्षेत्र समुद्र तल से 900 मीटर से 1500 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है।
- चाय की विशेषताएँ: मेघालय की चाय स्वाद में हल्की और नरम होती है। यह चाय विशेष रूप से उच्च गुणवत्ता वाली होती है, जिसका उपयोग प्रीमियम ब्रांडों में किया जाता है।

7. त्रिपुरा और मिजोरम:

- भौगोलिक स्थिति: ये राज्य भारत के उत्तर-पूर्वी हिस्से में स्थित हैं और समुद्र तल से 500 मीटर से 1500 मीटर की ऊंचाई पर होते हैं।
- चाय की विशेषताएँ: इन क्षेत्रों की चाय हल्की और मीठी होती है, और यहाँ का उत्पादन सीमित होते हुए भी बढ़ रहा है।

निष्कर्ष:

भारत में चाय की विभिन्न किस्में, क्षेत्रों की जलवायु, ऊँचाई, और भूमि की विशेषताओं के आधार पर भिन्न होती हैं। आसाम की चाय जहाँ मजबूत और तीव्र होती है, वहीं दार्जिलिंग की चाय हल्की और सुगंधित होती है। निलगिरी और कर्नाटका की चाय में भी हल्का स्वाद होता है, जबकि हिमाचल प्रदेश और उत्तर-पूर्वी राज्यों में हल्के और प्राकृतिक स्वाद की चाय अधिक लोकप्रिय होती है।

परियोजना पुस्तिका में इन स्थानों के नक्शे और चाय की विशेषताएँ अंकित करें, ताकि पाठकों को भारतीय चाय उत्पादन के विविध पहलुओं का अच्छा अवलोकन मिल सके।

पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ) पर आधारित अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर, सारांश

पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ) का सारांश

यह पाठ प्रख्यात कोंकणी और मराठी लेखक रवींद्र केलेकर की दो प्रेरणादायक गद्य रचनाओं – 'गिन्नी का सोना' और 'झेन की देन' – का संग्रहीत रूप है।

## Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

पहले प्रसंग 'गिन्नी का सोना' में लेखक आदर्शों और व्यावहारिकता की तुलना करते हैं। वे बताते हैं कि जैसे गिन्नी के सोने में तांबा मिलाकर उसे मजबूत और चमकदार बनाया जाता है, वैसे ही जीवन में कुछ लोग आदर्शों में व्यावहारिकता मिला देते हैं। लेकिन असली मूल्य तो आदर्शों का ही होता है। गांधीजी जैसे व्यक्तित्व आदर्शों को व्यवहार के स्तर पर नहीं लाते, बल्कि व्यवहार को आदर्श के स्तर तक उठाते हैं।

दूसरे प्रसंग 'झेन की देन' में लेखक जापानी जीवनशैली और ध्यान की परंपरा 'झेन' के अनुभव को साझा करते हैं। जापान में तेज रफ्तार जीवन मानसिक रोगों का कारण बनता है। ऐसे तनावपूर्ण वातावरण में 'टी सेरेमनी' जैसी पारंपरिक विधियाँ मन को शांति देती हैं। लेखक इस अनुभव से वर्तमान में जीने का महत्व समझते हैं और कहते हैं कि सच्चा जीवन वही है जो इस क्षण में जिया जाए।

यह पाठ पाठकों को सादगी, आत्मचिंतन और मूल्यों की ओर लौटने की प्रेरणा देता है। रवींद्र केलेकर की यह लेखनी जीवन के गहरे सत्यों को सरल भाषा में प्रस्तुत करती है।

## पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ) पर आधारित दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर

**प्रश्न 1.** रवींद्र केलेकर का जन्म कब और कहाँ हुआ?

उत्तर: रवींद्र केलेकर का जन्म 7 मार्च 1925 को कोंकण क्षेत्र में हुआ था। वे छात्र जीवन से ही गोवा मुक्ति आंदोलन में सक्रिय हो गए थे। उनका लेखन सामाजिक और मानवीय सरोकारों से जुड़ा हुआ है। रवींद्र केलेकर ने गांधीवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए कोंकणी और मराठी साहित्य को समृद्ध किया और अपनी रचनाओं में जन-जीवन के विविध पक्ष प्रस्तुत किए।

**प्रश्न 2.** 'गिन्नी का सोना' प्रसंग में लेखक ने आदर्श और व्यावहारिकता की तुलना किससे की है?

उत्तर: 'गिन्नी का सोना' में रवींद्र केलेकर ने आदर्श को शुद्ध सोने और व्यावहारिकता को उसमें मिलाए तांबे से तुलना की है। उन्होंने बताया कि शुद्ध आदर्श अपने आप में मूल्यवान हैं, लेकिन व्यवहार में थोड़ी व्यावहारिकता जोड़ने से वे मजबूत बन जाते हैं। फिर भी असली मूल्य आदर्श का ही होता है, जो अंततः समाज को ऊपर उठाता है।

**प्रश्न 3.** रवींद्र केलेकर ने गांधीजी के आदर्शों को किस रूप में प्रस्तुत किया है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर ने गांधीजी को 'प्रेक्टिकल आइडियालिस्ट' कहकर वर्णित किया है। वे बताते हैं कि गांधीजी व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर लाते थे, न कि आदर्शों को नीचे गिराते थे। उन्होंने अपने आदर्शों में व्यावहारिकता का समावेश कर समाज का मार्गदर्शन किया। इसी कारण गांधीजी का जीवन सोने की तरह मूल्यवान बना रहा।

**प्रश्न 4.** रवींद्र केलेकर द्वारा प्रस्तुत 'झेन की देन' प्रसंग में मानसिक रोगों का कारण क्या बताया गया है?

उत्तर: 'झेन की देन' प्रसंग में रवींद्र केलेकर बताते हैं कि जापान में लोग मानसिक रोगों से पीड़ित हैं क्योंकि उनका जीवन अत्यधिक तेज रफ्तार से चलता है। वे हमेशा व्यस्त रहते हैं, बोलने के बजाय बकते हैं और कार्यों को जल्दी पूरा करने की होड़ में रहते हैं। इस तनावपूर्ण जीवनशैली से मानसिक तनाव बढ़ता है और व्यक्ति अवासादग्रस्त हो जाता है।

## Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

**प्रश्न 5.** टी सेरेमनी में लेखक को कौन-से विशेष अनुभव हुए?

उत्तर: रवींद्र केलेकर ने टी सेरेमनी के दौरान आत्मिक शांति का अनुभव किया। वहाँ की गरिमा, चुप्पी और धीमी गतिविधियाँ उनके मन को शांति प्रदान करती हैं। चाय की प्रत्येक चुस्की के साथ उनका ध्यान वर्तमान क्षण में केंद्रित हो गया। लेखक कहते हैं कि उस दिन उन्हें जीने का सही अर्थ समझ में आया – केवल वर्तमान में जीना ही असली जीवन है।

**प्रश्न 6.** रवींद्र केलेकर के अनुसार व्यवहारवादी और आदर्शवादी में क्या अंतर है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर के अनुसार व्यवहारवादी व्यक्ति लाभ-हानि देखकर निर्णय लेते हैं और सफलता प्राप्त करते हैं, पर समाज को ऊँचाई पर नहीं ले जाते। जबकि आदर्शवादी लोग स्वयं भी ऊँचाई पर जाते हैं और समाज को भी ऊपर उठाते हैं। समाज में जो शाश्वत मूल्य हैं, वे आदर्शवादियों की ही देन हैं। व्यवहारवाद अक्सर समाज को नीचे गिराता है।

**प्रश्न 7.** चा-नो-यू विधि से रवींद्र केलेकर को क्या मानसिक प्रभाव हुआ?

उत्तर: चा-नो-यू विधि के माध्यम से रवींद्र केलेकर को मानसिक शांति और ध्यान की अनुभूति हुई। इस विधि ने उनके मस्तिष्क की गति को धीमा कर दिया और वे वर्तमान क्षण में जीने लगे। उन्हें लगा कि वे अनंत काल में जी रहे हैं। इस अनुभव से उन्हें यह समझ आया कि सच्चा जीवन भूत या भविष्य में नहीं, बल्कि वर्तमान में जीना है।

**प्रश्न 8.** रवींद्र केलेकर ने गिन्नी के सोने के माध्यम से किस जीवन दृष्टिकोण को समझाया है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर ने गिन्नी के सोने को प्रतीक बनाकर यह बताया कि शुद्ध आदर्श की अपनी कीमत होती है, लेकिन उसमें थोड़ी व्यावहारिकता मिलाकर उसे समाज में लागू करना सरल होता है। हालांकि, उन्होंने चेताया कि जब व्यावहारिकता ही प्रमुख बन जाती है, तो आदर्श पीछे छूट जाते हैं। इसलिए आदर्शों को कभी भी कमतर नहीं आंका जाना चाहिए।

**प्रश्न 9.** रवींद्र केलेकर के लेखन की कौन-सी विशेषता 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' में दिखाई देती है?

उत्तर: 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' में रवींद्र केलेकर की लेखन शैली की विशेषता यह है कि वे थोड़े शब्दों में गहरे विचार प्रस्तुत करते हैं। उनके लेखन में जीवन के गूढ़ अनुभव सरल भाषा में व्यक्त होते हैं। वे पाठक को केवल पढ़ने नहीं, बल्कि आत्मचिंतन और सक्रिय नागरिक बनने की प्रेरणा देते हैं। उनके प्रसंग कम शब्दों में बहुत कुछ कह जाते हैं।

**प्रश्न 10.** 'झेन परंपरा' की रवींद्र केलेकर ने क्या विशेषता बताई है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर ने जेन परंपरा की सबसे बड़ी विशेषता मानसिक एकाग्रता और वर्तमान क्षण में जीने की कला को बताया है। जापानियों ने इस परंपरा के माध्यम से भागदौड़ भरे जीवन में भी आत्मशांति का मार्ग अपनाया है। टी सेरेमनी जैसे अनुष्ठानों से वे स्वयं को तनावमुक्त करते हैं और जीवन की गहराई को महसूस करते हैं।

**प्रश्न 11.** रवींद्र केलेकर के अनुसार वर्तमान में जीने का क्या महत्व है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर के अनुसार, सच्चा जीवन वही है जो हम वर्तमान में जीते हैं। भूतकाल केवल स्मृति है और

## Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

भविष्य केवल कल्पना। इसलिए जीवन की सच्चाई वर्तमान में छिपी है। टी सेरेमनी के अनुभव से उन्होंने सीखा कि वर्तमान क्षण को पूर्णता से जीना ही जीवन की सबसे बड़ी कला है।

**प्रश्न 12.** रवींद्र केलेकर ने जापानी जीवनशैली की क्या आलोचना की है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर ने जापानी जीवनशैली की आलोचना करते हुए कहा कि वहाँ की तेज रफ्तार, प्रतिस्पर्धा और अति व्यस्तता ने मानसिक रोगों को जन्म दिया है। लोग बातचीत में शांति नहीं रखते और हर कार्य को जल्दबाजी में करते हैं। इसका परिणाम मानसिक तनाव और असंतुलन के रूप में सामने आता है।

**प्रश्न 13.** रवींद्र केलेकर की प्रमुख साहित्यिक कृतियाँ कौन-सी हैं?

उत्तर: रवींद्र केलेकर की प्रमुख कृतियाँ कोंकणी में *उजवाढाचे सूर*, *समिध*, *सांगली*, *हिमवाठ*, मराठी में *कोंकणीचें राजकरण*, *जापान जसा दिसला*, और हिंदी में *पतझर में टूटी पत्तियाँ* हैं। उनके लेखन में समाज के विभिन्न पक्षों का गहन चित्रण मिलता है। वे कोंकणी, मराठी, हिंदी और गुजराती में लेखन और अनुवाद कार्य के लिए प्रसिद्ध हैं।

**प्रश्न 14.** 'गिन्नी का सोना' प्रसंग से हमें क्या नैतिक शिक्षा मिलती है?

उत्तर: 'गिन्नी का सोना' प्रसंग से यह नैतिक शिक्षा मिलती है कि आदर्शों की कीमत बनी रहनी चाहिए। थोड़ी व्यावहारिकता जरूरी हो सकती है, लेकिन जब वह प्रधान हो जाती है, तो मूल्यों का ह्रास होता है। रवींद्र केलेकर ने समझाया कि समाज को स्थायी दिशा देने के लिए आदर्शवादी सोच को बनाए रखना आवश्यक है।

**प्रश्न 15.** रवींद्र केलेकर ने गांधीजी की व्यावहारिकता को किस दृष्टिकोण से देखा?

उत्तर: रवींद्र केलेकर ने गांधीजी की व्यावहारिकता को उनके आदर्शों की ऊँचाई से देखा है। वे बताते हैं कि गांधीजी ने आदर्शों को व्यावहारिकता में नहीं डुबोया, बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों की ऊँचाई पर पहुंचाया। यही कारण है कि उनका जीवन समाज के लिए प्रेरणादायी बना और उन्होंने सभी को नैतिकता का रास्ता दिखाया।

**प्रश्न 16.** रवींद्र केलेकर ने अपने लेखन में किन-किन विषयों को उठाया है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर ने अपने लेखन में जन-जीवन, सामाजिक मूल्य, आत्मनिरीक्षण, गांधीवाद, वर्तमान क्षण की महत्ता, ध्यान, ज्ञान दर्शन, मानसिक स्वास्थ्य और राष्ट्रीय चेतना जैसे विषयों को उठाया है। उनके लेख गहराई से सोचने पर विवश करते हैं और पाठक को एक जागरूक नागरिक बनने की प्रेरणा देते हैं।

**प्रश्न 17.** रवींद्र केलेकर की भाषा-शैली की विशेषता क्या है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर की भाषा-शैली सरल, प्रभावशाली और बिंबात्मक है। वे कम शब्दों में गहरे अर्थ प्रकट करते हैं। उनके लेखन में सूक्तियों जैसी स्पष्टता और दर्शन जैसी गहराई होती है। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ पढ़ने के बाद पाठक देर तक विचारों में डूबा रहता है।

**प्रश्न 18.** रवींद्र केलेकर को कौन-कौन से पुरस्कार मिले हैं?

उत्तर: रवींद्र केलेकर को गोवा कला अकादमी का साहित्य पुरस्कार सहित कई प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त हुए हैं। उनके योगदान को राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया। उनकी लेखनी ने कोंकणी भाषा को गौरव दिलाया और भारतीय साहित्य को नई दिशा दी।

## Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

**प्रश्न 19.** 'झेन की देन' पाठ के आधार पर बताइए ध्यान का महत्व क्या है?

उत्तर: 'झेन की देन' में रवींद्र केलेकर ध्यान के महत्व को रेखांकित करते हैं। वे बताते हैं कि ध्यान से व्यक्ति की मानसिक रफ्तार धीमी होती है, जिससे वह वर्तमान में केंद्रित होकर जीवन का आनंद ले सकता है। जापानियों की चाय पीने की विधि इस बात का प्रमाण है कि थोड़े समय में भी मानसिक शांति प्राप्त की जा सकती है।

**प्रश्न 20.** रवींद्र केलेकर के लेखन का समाज पर क्या प्रभाव पड़ा है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर का लेखन समाज में चेतना, नैतिकता और मानवीय मूल्यों को पुनर्स्थापित करने का कार्य करता है। उन्होंने गांधीवादी विचारधारा और झेन परंपरा जैसी विचारधाराओं को जोड़कर भारतीय समाज को आत्मविश्लेषण और संतुलन की दिशा दी। आज भी उनका लेखन युवाओं को प्रेरित करता है और सामाजिक सुधार की राह दिखाता है।

### पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ) पर आधारित लघु उत्तरीय प्रश्न उत्तर

**प्रश्न 1:** रवींद्र केलेकर ने गिन्नी के सोने को किस आदर्श से जोड़ा है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर ने गिन्नी के सोने को प्रैक्टिकल आदर्शों से जोड़ा है। जैसे गिन्नी के सोने में ताँबा मिलाकर उसे मजबूत बनाया जाता है, वैसे ही कुछ लोग आदर्शों में व्यवहारिकता मिलाकर जीवन में उन्हें लागू करते हैं। यह दृष्टिकोण पाठ में प्रतीकात्मक रूप से दर्शाया गया है।

**प्रश्न 2:** रवींद्र केलेकर के अनुसार सच्चे आदर्शवादी कौन होते हैं?

उत्तर: रवींद्र केलेकर के अनुसार सच्चे आदर्शवादी वे हैं जो व्यवहार को आदर्श के स्तर तक ले जाते हैं, न कि आदर्शों को व्यवहारिकता के स्तर पर लाते हैं। गांधीजी का उदाहरण देकर उन्होंने समझाया कि सच्चे आदर्शवादी समाज में मूल्यों की स्थापना करते हैं।

**प्रश्न 3:** 'झेन की देन' में रवींद्र केलेकर ने जापानी समाज के किस पक्ष को उजागर किया है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर ने जापानी समाज की तेज जीवन-रफ्तार और मानसिक तनाव को उजागर किया है। उन्होंने बताया कि जापानी लोग अत्यधिक व्यस्त रहते हैं, जिससे मानसिक रोग बढ़ रहे हैं। इस स्थिति से उबरने में 'झेन' परंपरा सहायक सिद्ध हुई है।

**प्रश्न 4:** रवींद्र केलेकर ने 'टी सेरेमनी' का अनुभव कैसा बताया है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर ने 'टी सेरेमनी' का अनुभव अत्यंत शांत, गरिमापूर्ण और आत्मिक शांति देने वाला बताया है। इसमें उन्होंने वर्तमान क्षण में जीने की कला को महसूस किया, जिससे उन्हें भूत और भविष्य की चिंता से मुक्ति मिली।

**प्रश्न 5:** रवींद्र केलेकर के लेखन की विशेषता क्या है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर के लेखन की विशेषता उसकी गहराई, जीवन के यथार्थ और मानव मूल्यों की प्रस्तुति है। उनके लेख जन-जीवन से जुड़ी सरल परंतु प्रभावशाली सूक्तियों से परिपूर्ण होते हैं, जो पाठक को सोचने और आत्मनिरीक्षण करने के लिए प्रेरित करते हैं।

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

प्रश्न 6: रवींद्र केलेकर ने गांधीजी को किस रूप में चित्रित किया है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर ने गांधीजी को ऐसे आदर्शवादी नेता के रूप में चित्रित किया है, जो व्यवहार में आदर्शों को समाहित कर समाज को ऊँचाई तक ले जाते हैं। उन्होंने कहा कि गांधीजी सोने में ताँबा नहीं, बल्कि ताँबे में सोना मिलाते थे।

प्रश्न 7: गिन्नी का सोना पाठ से रवींद्र केलेकर क्या संदेश देना चाहते हैं?

उत्तर: इस पाठ के माध्यम से रवींद्र केलेकर यह संदेश देना चाहते हैं कि शुद्ध आदर्श ही समाज को दिशा देते हैं। व्यवहारिकता आवश्यक है, परंतु उसे आदर्शों के अधीन रखना चाहिए, तभी समाज में सच्चे मूल्य स्थापित हो सकते हैं।

प्रश्न 8: झेन परंपरा का क्या प्रभाव पड़ा रवींद्र केलेकर पर?

उत्तर: झेन परंपरा का गहरा प्रभाव रवींद्र केलेकर पर पड़ा। उन्होंने 'टी सेरेमनी' के माध्यम से ध्यान और वर्तमान क्षण की महत्ता को महसूस किया, जिससे उन्हें जीवन में सच्चे अर्थों में 'जीना' समझ में आया। यह अनुभव उन्हें मानसिक शांति प्रदान करता है।

प्रश्न 9: रवींद्र केलेकर ने व्यवहारवाद पर क्या आलोचना की है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर ने व्यवहारवाद की आलोचना करते हुए कहा कि केवल लाभ-हानि देखने वाले लोग समाज को नीचे गिराते हैं। जबकि आदर्शवादी लोग न केवल स्वयं ऊँचे उठते हैं, बल्कि दूसरों को भी ऊँचाई तक ले जाते हैं और शाश्वत मूल्य स्थापित करते हैं।

प्रश्न 10: 'झेन की देन' प्रसंग में रवींद्र केलेकर को क्या आत्मिक अनुभूति हुई?

उत्तर: 'झेन की देन' में रवींद्र केलेकर को आत्मिक शांति, वर्तमान क्षण का बोध और मानसिक गति की स्थिरता का अनुभव हुआ। उन्होंने महसूस किया कि जब वर्तमान में पूरी तरह जिया जाए, तभी जीवन का सच्चा अर्थ समझ आता है।

प्रश्न 11: रवींद्र केलेकर ने मानसिक तनाव का क्या कारण बताया है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर ने मानसिक तनाव का कारण जीवन की तेज गति, प्रतिस्पर्धा और चिंताओं को बताया है। जापान के उदाहरण से उन्होंने समझाया कि तेज रफ्तार में जीना हमें थका देता है और झेन ध्यान जैसे अभ्यास ही इससे राहत दे सकते हैं।

प्रश्न 12: रवींद्र केलेकर के अनुसार आदर्शवादी समाज को क्या योगदान देते हैं?

उत्तर: रवींद्र केलेकर के अनुसार आदर्शवादी समाज को शाश्वत मूल्य, नैतिकता और ऊँचाई प्रदान करते हैं। वे समाज को आगे ले जाने की प्रेरणा देते हैं, जबकि केवल व्यवहारवादी लोग समाज की गुणवत्ता में गिरावट लाते हैं।

प्रश्न 13: रवींद्र केलेकर ने जापानी 'चा-नो-यू' विधि को कैसे वर्णित किया है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर ने 'चा-नो-यू' विधि को शांति, अनुशासन और मानसिक एकाग्रता का अनुभव कराने वाली प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया है। इसमें सभी गतिविधियाँ बेहद गरिमापूर्ण होती हैं, जो व्यक्ति को धीमी गति में जीना सिखाती हैं।

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

प्रश्न 14: रवींद्र केलेकर के लेखन में कौन-सा गुण प्रमुख रूप से दिखाई देता है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर के लेखन में प्रमुख गुण उनकी सूक्ष्म दृष्टि और गूढ विचारों को सरल भाषा में प्रस्तुत करना है। वे थोड़े शब्दों में गहरी बातें कहते हैं, जिससे पाठक को स्वयं चिंतन करने की प्रेरणा मिलती है।

प्रश्न 15: 'गिन्नी का सोना' शीर्षक का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है?

उत्तर: 'गिन्नी का सोना' शीर्षक प्रतीकात्मक रूप से आदर्शों में व्यावहारिकता मिलाने को दर्शाता है। रवींद्र केलेकर इसे सावधानी से जोड़ते हैं कि आदर्शों की मूल चमक बनी रहनी चाहिए और उन्हें नीचे नहीं गिराना चाहिए।

प्रश्न 16: रवींद्र केलेकर ने किन भाषाओं में लेखन किया?

उत्तर: रवींद्र केलेकर ने कोंकणी, मराठी, हिंदी और गुजराती भाषाओं में लेखन किया। वे बहुभाषी लेखक थे जिनकी कोंकणी में 25 से अधिक और मराठी में 3 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जिससे उनकी साहित्यिक व्यापकता सिद्ध होती है।

प्रश्न 17: रवींद्र केलेकर के अनुसार 'जीना' क्या है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर के अनुसार 'जीना' का अर्थ है वर्तमान क्षण में पूरी तरह उपस्थित होकर उसे अनुभव करना। 'झेन की देन' के माध्यम से उन्होंने बताया कि जब भूत और भविष्य की चिंता मिट जाती है, तब जीवन का सच्चा अनुभव होता है।

प्रश्न 18: रवींद्र केलेकर के विचारों में गांधीजी का स्थान क्या है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर गांधीजी को आदर्शवादी और व्यवहारिकता को संतुलित करने वाले नेता मानते हैं। उन्होंने बताया कि गांधीजी ने आदर्शों को कभी छोड़ा नहीं बल्कि उन्हें व्यवहार में लाकर समाज को ऊँचाई तक पहुँचाया।

प्रश्न 19: रवींद्र केलेकर ने आधुनिक जीवन की गति पर क्या टिप्पणी की है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर ने आधुनिक जीवन की तेजी को मानसिक रोगों का कारण बताया है। उन्होंने कहा कि प्रतिस्पर्धा और तेज रफ्तार में जीने की प्रवृत्ति मनुष्य को थका देती है और मन की शांति को छीन लेती है।

प्रश्न 20: रवींद्र केलेकर का साहित्यिक योगदान क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर: रवींद्र केलेकर का साहित्यिक योगदान इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने समाज के गहरे प्रश्नों को सरलता और मौलिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। उनके लेखन में नैतिकता, आत्मचिंतन और समाज सुधार की प्रेरणा निहित है, जो आज भी प्रासंगिक है।

---

पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ) पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

1. रवींद्र केलेकर का जन्म कब हुआ था?

- A) 1923
- B) 1924
- C) 1925

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

D) 1926

उत्तर: C) 1925

2. रवींद्र केलेकर का संबंध किस आंदोलन से था?

A) स्वदेशी आंदोलन

B) गोवा मुक्ति आंदोलन

C) चंपारण सत्याग्रह

D) भारत छोड़ो आंदोलन

उत्तर: B) गोवा मुक्ति आंदोलन

3. रवींद्र केलेकर किस भाषा के प्रमुख लेखक हैं?

A) हिंदी

B) मराठी

C) कोंकणी

D) गुजराती

उत्तर: C) कोंकणी

4. रवींद्र केलेकर ने किस लेखक की पुस्तकों का संपादन किया?

A) प्रेमचंद

B) काका कालेलकर

C) हजारीप्रसाद द्विवेदी

D) मोहन राकेश

उत्तर: B) काका कालेलकर

5. 'गिन्नी का सोना' किसकी ओर संकेत करता है?

A) शुद्ध सोने की चमक

B) आदर्श और व्यावहारिकता के मिश्रण की ओर

C) तांबे की महत्ता

D) सोने के दाम

उत्तर: B) आदर्श और व्यावहारिकता के मिश्रण की ओर

6. रवींद्र केलेकर को कौन-सा प्रमुख पुरस्कार प्राप्त हुआ है?

A) ज्ञानपीठ पुरस्कार

B) साहित्य अकादमी पुरस्कार

C) गोवा कला अकादमी पुरस्कार

D) पद्म विभूषण

उत्तर: C) गोवा कला अकादमी पुरस्कार

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

7. गांधीजी को किस रूप में बताया गया है?

- A) कठोर नेता
- B) प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट
- C) क्रांतिकारी
- D) लेखक

उत्तर: B) प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट

8. 'झेन की देन' पाठ का मुख्य विषय क्या है?

- A) आर्थिक विकास
- B) मानसिक स्वास्थ्य और ध्यान
- C) खेल प्रतियोगिता
- D) साहित्य लेखन

उत्तर: B) मानसिक स्वास्थ्य और ध्यान

9. चाय पीने की जापानी विधि को क्या कहा जाता है?

- A) चाय-सेवा
- B) चा-नो-यू
- C) साकुरा-चाय
- D) जापानी-संवाद

उत्तर: B) चा-नो-यू

10. झेन परंपरा का मूल उद्देश्य क्या है?

- A) भविष्य की योजना बनाना
- B) वर्तमान में जीने की कला
- C) भूतकाल को याद करना
- D) व्यावसायिक सफलता

उत्तर: B) वर्तमान में जीने की कला

11. रवींद्र केलेकर ने कितनी कोंकणी पुस्तकों की रचना की है?

- A) दस
- B) बीस
- C) पच्चीस
- D) पंद्रह

उत्तर: C) पच्चीस

12. 'गिन्नी का सोना' किस चीज़ का प्रतीक है?

- A) शुद्धता का
- B) धन का

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

C) मिश्रित मूल्य का

D) सुंदरता का

उत्तर: C) मिश्रित मूल्य का

13. 'झेन की देन' में लेखक को क्या अनुभव हुआ?

A) तेज गुस्सा

B) मानसिक शांति

C) भूख लगना

D) थकावट

उत्तर: B) मानसिक शांति

14. जापान में मानसिक रोग क्यों बढ़े हैं, लेखक के अनुसार?

A) खराब खानपान

B) तेज जीवनशैली और तनाव

C) प्रदूषण

D) मौसम के कारण

उत्तर: B) तेज जीवनशैली और तनाव

15. रवींद्र केलेकर ने किन भाषाओं में लिखा है?

A) केवल कोंकणी

B) कोंकणी और मराठी

C) कोंकणी, मराठी, हिंदी, गुजराती

D) केवल हिंदी

उत्तर: C) कोंकणी, मराठी, हिंदी, गुजराती

16. टी सेरेमनी में एक बार में कितने व्यक्ति शामिल हो सकते हैं?

A) दो

B) चार

C) पाँच

D) तीन

उत्तर: D) तीन

17. लेखक को सन्नाटा किस समय सुनाई देने लगता है?

A) टी सेरेमनी के अंत में

B) टी सेरेमनी की शुरुआत में

C) रोजमर्रा के जीवन में

D) चाय बनाते समय

उत्तर: A) टी सेरेमनी के अंत में

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

18. रवींद्र केलेकर की हिंदी में प्रमुख कृति कौन-सी है?

- A) समिध
- B) पतझर में टूटी पत्तियाँ
- C) सांगली
- D) जापान जसा दिसला

उत्तर: B) पतझर में टूटी पत्तियाँ

19. गांधीजी के अनुसार व्यावहारिकता को कहाँ लाना चाहिए?

- A) आदर्शों के स्तर पर
- B) तटस्थ स्तर पर
- C) व्यापार के स्तर पर
- D) आम जनजीवन के स्तर पर

उत्तर: A) आदर्शों के स्तर पर

20. 'झेन की देन' का असर लेखक पर क्या हुआ?

- A) तनाव बढ़ा
- B) उलझन बढ़ी
- C) दिमाग शांत हुआ
- D) बोरियत महसूस हुई

उत्तर: C) दिमाग शांत हुआ

---

पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ) पर आधारित True or False (सही या गलत)

1. रवींद्र केलेकर का जन्म 1925 में हुआ था।  
उत्तर: सही
2. रवींद्र केलेकर हिंदी भाषा के लेखक थे।  
उत्तर: गलत (वे मुख्यतः कोंकणी भाषा के लेखक थे)
3. 'गिन्नी का सोना' आदर्श और व्यावहारिकता के मेल का प्रतीक है।  
उत्तर: सही
4. लेखक के अनुसार गांधीजी केवल एक आदर्शवादी व्यक्ति थे।  
उत्तर: गलत (गांधीजी को व्यावहारिक आदर्शवादी बताया गया है)
5. 'झेन की देन' जापान में लेखक के अनुभव पर आधारित रचना है।  
उत्तर: सही

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतञ्जर में टूटी पत्तियाँ)

6. झेन परंपरा का उद्देश्य भूतकाल में जीना है।  
उत्तर: गलत (इसका उद्देश्य वर्तमान में जीना है)
7. टी सेरेमनी में 8-10 लोग एक साथ बैठते हैं।  
उत्तर: गलत (केवल 3 लोग भाग लेते हैं)
8. रवींद्र केलेकर को गोवा कला अकादमी पुरस्कार मिला है।  
उत्तर: सही
9. झेन के अनुसार मौन और ध्यान मानसिक शांति प्रदान करते हैं।  
उत्तर: सही
10. 'झेन की देन' नामक लेख में लेखक ने चीनी संस्कृति की प्रशंसा की है।  
उत्तर: गलत (जापानी संस्कृति की बात की गई है)
11. लेखक को चाय की जापानी विधि से ऊब होती है।  
उत्तर: गलत (उन्हें मानसिक शांति का अनुभव होता है)
12. गांधीजी ने आदर्श को व्यवहार में लाने की बात कही थी।  
उत्तर: सही
13. रवींद्र केलेकर ने केवल हिंदी भाषा में रचना की है।  
उत्तर: गलत (उन्होंने कोंकणी, मराठी, हिंदी, गुजराती में लिखा)
14. लेखक के अनुसार जापान में मानसिक रोगों का कारण ध्यान और मौन है।  
उत्तर: गलत (कारण तेज़ जीवनशैली और तनाव है)
15. 'झेन की देन' में लेखक ने सन्नाटे को सुना और महसूस किया।  
उत्तर: सही
16. लेखक का मानना है कि आदर्श हमेशा व्यवहार से नीचे होते हैं।  
उत्तर: गलत (वे व्यवहार को आदर्श तक लाने की बात करते हैं)
17. रवींद्र केलेकर ने गोवा मुक्ति आंदोलन में भाग लिया था।  
उत्तर: सही
18. झेन परंपरा जापान की एक आधुनिक वैज्ञानिक परंपरा है।  
उत्तर: गलत (यह एक पारंपरिक बौद्ध परंपरा है)
19. लेखक को चाय पीने की जापानी विधि कृत्रिम लगी।  
उत्तर: गलत (वह उसे ध्यान और साधना का माध्यम मानते हैं)

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

20. 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' आत्मनिरीक्षण पर केंद्रित लेख है।

उत्तर: सही

---

पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ) पर आधारित रिक्त स्थान भरिए -

- रवींद्र केलेकर का जन्म वर्ष \_\_\_\_\_ में हुआ था।  
उत्तर: 1925
- लेखक रवींद्र केलेकर मूलतः \_\_\_\_\_ भाषा के लेखक थे।  
उत्तर: कोंकणी
- 'गिन्नी का सोना' लेख में \_\_\_\_\_ और \_\_\_\_\_ के बीच संतुलन की बात की गई है।  
उत्तर: आदर्श, व्यवहार
- गांधीजी को लेखक ने \_\_\_\_\_ आदर्शवादी कहा है।  
उत्तर: व्यावहारिक
- 'झेन की देन' लेख \_\_\_\_\_ देश में लेखक के अनुभव पर आधारित है।  
उत्तर: जापान
- झेन परंपरा \_\_\_\_\_ धर्म से जुड़ी हुई है।  
उत्तर: बौद्ध
- झेन के अनुसार सच्चा जीवन \_\_\_\_\_ में जीना है।  
उत्तर: वर्तमान
- जापानी चाय-समारोह में कुल \_\_\_\_\_ लोग भाग लेते हैं।  
उत्तर: तीन
- लेखक को झेन परंपरा से \_\_\_\_\_ की अनुभूति होती है।  
उत्तर: मानसिक शांति
- लेखक को जापान में चाय पीने का अनुभव किसी \_\_\_\_\_ जैसा लगता है।  
उत्तर: ध्यान/साधना
- रवींद्र केलेकर को गोवा कला अकादमी का पुरस्कार \_\_\_\_\_ में प्राप्त हुआ।  
उत्तर: 1984
- लेखक ने गांधीजी के विचारों को \_\_\_\_\_ रूप में देखा है।  
उत्तर: व्यावहारिक

Ncert Solutions of पाठ 13 रवींद्र केलेकर (पतझर में टूटी पत्तियाँ)

- झेन का अभ्यास \_\_\_\_\_ और \_\_\_\_\_ से जुड़ा होता है।  
उत्तर: मौन, ध्यान
- लेखक के अनुसार आदर्श को \_\_\_\_\_ में उतारना चाहिए।  
उत्तर: व्यवहार
- 'गिन्नी का सोना' का मूल भाव है कि मूल्यवान चीज़ को \_\_\_\_\_ करना होता है।  
उत्तर: परखना
- झेन अनुशासन जीवन में \_\_\_\_\_ और \_\_\_\_\_ लाने में सहायक है।  
उत्तर: शांति, संतुलन
- लेखक ने 'झेन की देन' में \_\_\_\_\_ सुनने की बात कही है।  
उत्तर: सन्नाटा
- गांधीजी ने कहा था कि जीवन में सबसे बड़ा आदर्श है \_\_\_\_\_।  
उत्तर: सत्य
- लेखक के अनुसार आदर्श का अर्थ है कि हम अपने \_\_\_\_\_ को ऊँचा उठाएँ।  
उत्तर: व्यवहार
- झेन परंपरा में जीवन का सौंदर्य \_\_\_\_\_ में देखा जाता है।  
उत्तर: सरलता/सादगी